संगीत के क्षेत्र में घरानों की अवधारणा

डॉ. हरिओम सोनी
सहायक प्राध्यापक, संगीत
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर, (म.प्र.)

सारांश -

घराना शब्द संगीत के क्षेत्र में मध्यकाल की देन है जो कि एक विशिष्ट गुरू-शिष्य परंपरा का बोध कराता है। गायन, वादन एवं नृत्य तीनों क्षेत्रों में घराने पाये जाते हैं घरानों का निमार्ण परिस्थिति वश हुआ जिसके सुखद परिणाम सामने आये संगीत जगत को घरानेदार गुरूओं के द्वारा श्रृजित एवं उनकी साधना द्वारा परिष्कृत संगीत की प्राप्ति हुई। घरानों का निर्माण किसी संगीत गुरू द्वारा श्रृजित संगीत एवं उनकी वंश परंपरा एवं शिष्य परंपरा के द्वारा उसे उसी रूप में लगातार तीन पीढ़ीयों तक अभ्यास के द्वारा हुआ। वर्तमान समय में घराने नहीं है सभी संगीतज्ञ एक दूसरे संगीतज्ञ का संगीत सुन रहे हैं एवं उनमें समाहित सूक्ष्म तत्वों को अपना भी रहे है, वर्तमान समय में घराने नहीं है परन्तु विद्वानों द्वारा स्थापित घरानेदार संगीत विशेषतायें हमेंशा रहेंगी।

मुख्य शब्द - घराना, संगीतज्ञ, संगीत, संप्रदाय।

संगीत के क्षेत्र में आम बोलचाल की भाषा में घराना शब्द आम तौर पर सुनने में आता है। सामान्य तौर पर संगीतकारों एवं संगीत के विद्यार्थियों द्वारा गायन,वादन एवं नृत्य के संदर्भ में घराना शब्द का प्रयोग किया जाता है, आखिर घराना क्या है? घराना घर शब्द से बना है जिस का अर्थ है जिस घर परिवार में हम रहते हैं वह घर। जिस प्रकार प्रत्येक घर की रीति-रिवाज़, मान्यतायें-परम्परायें, पूजा-पाठ का तरीका भिन्न-भिन्न होता है और अपने घर की परंपराओं का निर्वाह पुत्र-पुत्री के द्वारा किया जाता है और इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुये पौत्र-प्रपोत्रों द्वारा किया जाता है और परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी इन परंपराओं के निर्वाह के कारण उनमें समानता पाई जाती है और यह परंपरा आगे आने वाली पीढ़ी में हस्तांतरित होती हुई आगे बढ़ती चली जाती है। इसे प्रत्येक परिवार की अपनी परंपरा मान लिया जाता है।

इसी परिवार स्वरूपी परंपरा का निर्वाह जब संगीत के क्षेत्र में किया गया तो इसे घराना या संगीत के घराने नाम से संबोधित किया गया। संगीत के क्षेत्र में घराना मध्य युग की देन हैं तथापि इसके पहले भी प्राचीन काल से ही संगीत के क्षेत्र में घरानों का प्रचलन था जिसे संप्रदाय के नाम से संबोधित किया गया। घराना एवं संप्रदाय दोनों में ही संगीत की परंपरा यथा गायन, वादन एवं नृत्य का निर्वाह किया जाता था। परन्तु दोनों में बुनियादी फर्क है। प्राचीन प्रचलित शब्द संप्रदाय शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है सम एवं प्रदाय अर्थात् समान रूप से प्रदान की जाने वाली संगीत की शिक्षा संगीत के संप्रदायों में भी घरानों की ही तरह परंपरागत रूप से संगीत की शिक्षा प्रदान की जाती थी जिसमें धर्म, जाति एवं सामाजिक भेदभाव के बिना सभी विद्यार्थियों को समान रूप से शिक्षा प्रदान की जाती थी जिससे इस प्रकार की शिक्षा पद्धति का स्वरूप शुद्ध एवं पवित्र था।

इसी संगीत संप्रदाय का परिवर्तित स्वरूप मध्य काल में घराना कहा जा सकता है तथापि दोनों के मौलिक रूप एक दूसरे से विपरीत हैं। जहाँ संप्रदाय का उद्देश्य सभी को समान रूप से शिक्षा प्रदान करना रहा वहीं घरानों का जन्म इसके विपरीत केवल अपने घर-परिवार के सदस्यों को ही संगीत शिक्षा देने तक सीमित रहा इसीलिये इस संगीत शिक्षण व्यवस्था का नाम घराना पड़ा अर्थात् केवल अपने घर-परिवार के सदस्यों को दी जाने वाली शिक्षा। अपने प्रारंभिक काल में यह घरानेदार संगीत शिक्षा तीन प्रकार से दी जाती थी। पहला खास-उल-खास यह शिक्षा केवल अपने पुत्रों प्रपौत्रों को दी जाती थी, दूसरा प्रकार था खास इसमें अपने परिवार के अलावा अपने रिश्तेदारों को दी जाने वाली संगीत शिक्षा शामिल थी, तीसरे प्रकार की शिक्षा थी आम जिसे बाहरी लोगों को संगीत सिखाया जाता था। अपने इस अर्थ में घरानेदार शिक्षा भेदभाव पूर्ण है। वर्तमान संगीत संबंधी पुस्तकों में ऐसा लिखा पाया जाता है कि संप्रदाय घरानों का प्रचीन नाम है या दक्षिण भारत में घरानों को संप्रदाय नाम से संबोधित किया जाता है जोकि उचित नहीं है।

जिस संगीत का प्रयोग ईश्वर आराधना हेतु किया जाता रहा है और उसी संगीत के घरानों का जन्म इतनी संकीर्ण मानसिकता के कारण क्यों हुआ? इसका कारण जानना आवश्यक है। देश में घरानों का जन्म ऐसे समय काल में हुआ जब देश में सामाजिक एवं राजनैतिक रूप से विषम परिस्थितियां थी। केवल आंशिक रूप से संगीतकारों को राजदरबारों में संगीतज्ञ नियुक्त किया जाता था अन्य संगीतकारों को जीवन यापन करने के लिये काफी संघर्ष करना पड़ता था। इन संगीतकारों की स्थिति और भी खराब तब हो गई जब देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये संघर्ष शुरू हो गए ऐसे विपरीत समय में भी ऐसे संगीतकार जो अपना जीवन यापन करने हेतु संगीत को छोड़कर अन्य साधनों को अपना सकते थे लेकिन उन्हें हमारे शास्त्रीय संगीत के प्रति जिम्मेदारी का अहसास था, उन्हें ये भलि भाँति ज्ञात था कि परंपराओं से चले आ रहे संगीत को आगे ले जाने की जिम्मेदारी उनके कंधों पर है यदि वह संगीत साधना करके अपने संगीत को नहीं बचाते और अगली पीढ़ी को हस्तांतरित नहीं करते तो संगीत की जो अच्छुण्ण परंपरा चली आ रही है उसके समाप्त होने का खतरा है। इन संगीतकारों ने अपनी विषम आर्थिक परिस्थितियों से जूझते हुये न केवल संगीत को बचा कर रखा बल्कि अपनी वंश परंपरा के माध्यम से संगीत की इस अमूल्य धरोहर को अगली पीढ़ी को हस्तांतरित भी किया। इस प्रकार वर्तमान संगीत समाज इन संगीत मनीषियों का आभारी है जिनके कारण हमारी संगीत की अमूल्य धरोहर हमारे पास है।

संगीत में घरानों का जन्म या निर्माण कार्य में किसी एक संगीत गुरू के द्वारा संगीत की किसी एक विद्या को अपने पुत्रों-प्रपौत्रों को सिखाया गया एवं एक समान या एक ही प्रकार के संगीत को क्रमशः तीन पीढ़ीयों तक उसी स्वरूप में अभ्यास के माध्यम से साधा गया और एक विशेषता लिये हुये संगीत का कलात्मक रूप से सृजन हुआ जो कि प्रचलित अन्य सभी प्रकारों से भिन्न था और विशेष सौदर्य लिये हुये था। घरानों का निमार्ण कार्य परिस्थिति जन्य भी था इस समय काल में संचार के माध्यम एवं आवागमन के साधन निम्न थे एक गायक-वादक दूसरे का संगीत नहीं सुन पाते थे जिसका सुखद परिणाम यह हुआ कि संगीत का स्वरूप शुद्ध रूप में रहा यही कारण है कि प्रत्येक घराने के संगीत की खुश्बू अलग-अलग सुगंध लिये होती है।

संगीत में घरानों का नामकरण घराने के निमार्णकर्ता व्यक्ति के निवास स्थान के नाम किया गया यथा

तबला वादन में मुख्य छः घराने है दिल्ली घराना, अजराड़ा घराना, लखनऊ घराना, फर्रूखाबाद घराना, बनारस घराना एवं पंजाब घराना इन सभी घरानों के निर्माणकर्ता संगीतज्ञ उसी स्थान के थे जैसे तबले के दिल्ली घराना नींव उस्ताद सिद्धार खाँ ढ़ाडी ने रखी जोकि दिल्ली शहर निवासी थे जिससे तबले का दिल्ली घराना स्थापित हुआ। इसी प्रकार गायन में ग्वालियर घराना, जयपुर घराना, मेवाती घराना, किराना घराना, पटियाला घराना इत्यादि स्थान विशेष के नाम से स्थापित हुए। इसी क्रम में कथक नृत्य के क्षेत्र में लखनऊ घराना, बनारस घराना इत्यादि स्थापित हुए। एक घराने के निमार्ण के पश्चात् शिष्य परंपराओं के माध्यम से घरानों की शाखाओं का निर्माण होता चला गया जिससे संगीत के क्षेत्र में अनेक घरानों का निमार्ण हुआ।

प्रत्येक घरानेदार संगीतज्ञ ने अपनी विद्या से संबंधित संगीत के सभी पक्षों पर बहुत सूक्ष्मता पूर्वक कार्य किया और अपने संगीत का अधिकतम विकास किया जो वर्तमान समय में संगीत जगत को उपलब्ध है। परन्तु आज परिस्थितिया बदल चुकी है वतर्मान इक्कीसवी सदी है और आज हम सभी इन्टरनेट युग में जी रहें है प्रत्येक संगीतकार अपने समकक्ष एवं पुराने सभी संगीतकारों के संगीत को सुन पा रहा है एवं अपने घराने के अतिरिक्त दूसरे घराने के संगीतकारों द्वारा सृजित संगीत को अपना भी रहा है । वर्तमान समय का संगीत एक फूलों के गुलदस्ते के समान है जिसमें सभी प्रकार के फूल है और सभी की अपनी-अपनी सुगंध है। वर्तमान समय में अनेक शासकीय संस्थाओं में घरानेदार संगीतज्ञ अपनी सेवाये दे रहे है । इस प्रकार वर्तमान समय का संगीत घरानों की परम्परा से आगे निकल चुका है एवं प्रत्येक वर्ग के विद्यार्थियों को घरानेदार संगीत शिक्षा प्राप्त हो रहीं है। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि वतर्मान समय में घरानों का अस्तित्व तो अब नहीं रहा लेकिन संगीत मनीषियों द्वारा जो संगीत में प्रयोग किये और संगीत में सृजन कार्य हुआ, जिससे घरानों की स्थापना हुई वह सभी सांगीतिक रचनाएँ आज वर्तमान समय में उपलब्ध है और संगीत जगत को पुष्पित-पल्व्वित कर रहीं हैं।

संदर्भ -

1. गर्ग, डॉ. लक्ष्मीनारायण 'वसंत''संगीत विशारद', प्रकाशक : संगीत कार्यालय हाथरस, वर्ष- 2004
2. जोशी, उमेश, 'भारतीय संगीत का इतिहास', प्रकाशक : मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, फीरोजाबाद, आगरा उत्तर प्रदेश। वर्ष- 1969
3. सचदेव, डॉ. रेनु, 'धार्मिक परम्परायें एवं हिन्दुस्तानी संगीत', प्रकाशक : राधा पब्लिकेशन्श, 4378/4बी अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली। वर्ष- 1999
4. शर्मा, डॉ. मृत्युन्जय, एवं त्रिपाठी, राम नारायन 'संगीत मैनुअल', प्रकाशक : एच. जी. पब्लिकेशन 77 मदनगिरी नई दिल्ली, वर्ष- 2005
5. सिंह, डॉ. लावण्य कीर्ति 'काव्या' 'भारतीय संगीत ग्रंथ (वर्ण-विषय विश्लेषण)', प्रकाशक : कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स 4679/5-21 ए अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली, वर्ष- 2014
6. 'बृहस्पति, आचार्य कैलाशचन्द्रदेव, 'ध्रुपद और उसका विकास', प्रकाशक : बिहार - राष्ट्रभाषा-परिषद् पटना, वर्ष- 2000